Lecture - (145)

गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग

- Mamta Rani
Guest Assistant Prof.
Deptt. of History.
~~BA~~
SNSRKS College,
Saharsa.

BA Part - I.
Paper - Ist.

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

गुप्त सम्राटों ने ऐसा आदर्श पेश किया जिससे कई पीढियाँ प्रभावित हुई। गुप्त साम्राज्य ने ऐसा युग चलाया जिसने प्राचीन भारत के इतिहास पर प्रभाव डाला। 2

गुप्त शासको ~~के लिए~~ ~~शासन व्यवस्था व्यवस्था का निर्माता~~ ने एक ऐसी उदार एंव परोपकारी ~~की~~ शासन-व्यवस्था का निर्माण किया वह न केवल प्राचीन अपितु आधुनिक युग के लिए भी आदर्श ~~की~~ प्रस्तुत किया। समग्र शांति एंव व्यवस्था का राज्य था जहाँ आवागमण पूर्णतया सुरक्षित थे। ~~यहा~~ फाहियान ने भी अपने विवरण मे कोई शिकायत नही किया है। कालिदास इस युग कि शांति एंव सुव्यवस्था का चित्रण करते हुए लिखते है कि 'उपवनो मे सोती हुई मदिरामत्त ~~की~~ सुन्दरियों के वस्त्रों को वायु तक स्पर्श नही करता या तो भला उनके आभूषणों को चुराने का साहस किसमें था। जबकि ध्यान रहे कि गुप्त नरेशों ने प्राचीन दण्ड व्यवस्था व्यवस्था के कड़े नियमो को उदार तथा मृदु बना दिया और मृत्युदण्ड को पूर्णतया समाप्त कर दिया था। स्कन्दगुप्त कालीन जुनागढ अभिलेख से पता चलता कि कोई भी व्यक्ति दुःखी, दरिद्र, व्यसनी लोभी अथवा पीड़ित नही था। शासक अपने प्रजा की सुख-सुविधा का ख्याल रखते थे।

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

ऐसा भास और अश्वघोष की कृतियों से सिद्ध होता है।

मौर्य-साम्राज्य के पतन के बाद गुप्त शासकों ने अपने पराक्रम एंव वीरता के बल पर उन्होंने प्रायः समस्त भारतवर्ष को एकता के सूत्र में आबद्ध कर दिया। गुप्त-साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विन्ध्यपर्वत तक, पूर्व में बंगाल से पश्चिम में सौराष्ट्र तक फैला हुआ था। दक्षिणापथ के शासक भी उनकी राजनीतिक प्रभुसत्ता को स्वीकार करते थे। राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि ने साहित्य, विज्ञान, कला और संस्कृति को समृद्ध होने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डा. आर॰सी॰ मजूमदार का मत है कि गुप्तकालीन सम्राटों ने भारतीय इतिहास पर अपनी छाप लगाई। उन्होने ऐसा आदर्श पेश किया जो कि भविष्य में अनुकरणीय था। गुप्तकाल की महत्ता इतनी थी कि अब भी हम उसको भारत का स्वर्णयुग अथवा क्लासिकल युग कहते हैं। उस काल में लोगों ने सभी क्षेत्रों में ऐसी उन्नति की जिसकी आज तक सराहना होती है। उन्नति के क्षेत्र साहित्य विज्ञान कला आदि थे। गुप्त सम्राटो ने लोगों को शान्ति प्रदान की। गुप्त साम्राज्य इतनी अधिक अवधि तक रहा जितना और कोई साम्राज्य भारत में न रहा।

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग

सरल भाषा मे, स्वर्ण काल उस काल को कहते हैं जब किसी देश की संस्कृति अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त करती है। इस दृष्टि से, गुप्त सम्राटों का शासन-काल प्राचीन भारतीय इतिहास के उस युग का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें सभ्यता और संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई तथा हिन्दू संस्कृति अपने उत्कर्ष की पराकाष्ठा पर पहुँच गयी। इस काल की चहुमुखी प्रगति को ध्यान में रखकर ही इतिहासकारों ने इस काल को स्वर्ण युग कहा है। गुप्तकाल को 'क्लासिकल युग' अथवा 'भारत का पेरीक्लीन युग' आदि नामों से जाना जाता है। क्लासिकल युग के बारे में डाक्टर रोमिला थापर लिखती हैं, "क्लासिकल युग वह युग है जिसमें साहित्य, वास्तुकला तथा ललित कलायें उत्कर्ष के ऐसे स्तर तक पहुँच जायें कि आने वाले समय के लिए आदर्श बन सके।" यह सर्वविदित है कि गुप्त काल ने अपने प्रतापी राजाओं के सर्वोत्कृष्ट संस्कृति, तथा मानव जीवन के सभी क्षेत्रो मे, प्रफुल्लता एंव समृद्धि के दर्शन किये। कुछ विद्वानों का मानना था कि गुप्तकाल में साहित्य का पुनर्जन्म हुआ, परन्तु यह विचार भ्रामक लगती है क्योंकि संस्कृत का किसी काल मे भी बिल्कुल ह्रास नहीं हुआ था

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz